PART-**1**

यूनानी भूगोलवेत्ता- होमर

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

यूनानी भूगोलवेत्ता (Greek Geographers)

पृथ्वी के विभिन्न भागों के पर्यावरण और उनके निवासियों की जीवन पद्धति पर वर्णनात्मक लेखन का आरंभ यूनान में नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में हो गया था । तत्कालीन महाकवि होमर (Homer) की दो काव्य रचनाओं में महत्वपूर्ण भौगोलिक वर्णन मिलते हैं। इसके पश्चात् के वर्षों में थेल्स (Thales), अनेग्जीमैण्डर (Anaximander), हेकैटियस् (Hecataeus), हेरोडोटस (Herodotus), अरस्तू (Aristotle), थियोफ्रेस्टस (Theophrastus), इरेटोस्थनीज (Eratosthenes), पोलीबियस (Polybius), हिप्पारचुस (Hipparchus), पोसिडोनियस (Posidoneus) आदि प्रमुख यूनानी विद्वानों ने भौगोलिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अग्रांकित पंक्तियों में इन यूनानी विद्वानों के योगदानों की संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

(2) थेल्स या थालेस (Thales)

प्रसिद्ध दार्शनिक और गणितज्ञ थेल्स या थालेस (640-546 ई० पू०) एजियन सागर के पूर्वी तट पर स्थित मिलेटस (Miletus) नगर का निवासी थे थेल्स को प्रथम यूनानी विद्वान माना जाता है जिन्होंने पृथ्वी के तल पर विभिन्न स्थानों की स्थिति निर्धारण की दिशा में सार्थक प्रयत्न किया था। वे स्वयं एक व्यापारी थे और उन्होंने व्यापार हेतु मिग्र की यात्रा की। वे मिग्र वासियों द्वारा स्थानों की लम्बाई-चौड़ाई की माप तथा क्षेत्रफल ज्ञात करने की ज्यामितीय प्रणाली से बहुत प्रभावित हुए थे। स्वदेश लौटने पर उन्होनें अपने देशवासियों को उन विधियों से परिचित कराया। उन्होंने कई समीपवर्ती देशों की यात्राएं कीं और उस दौरान अनेक खोजें भी कीं।

थेल्स ने बताया था कि नील नदी दो नदियों बाहेल गजल (श्वेत नील) और बाहेल अजरक (नीली नील) के मेल से बनी है। थेल्स का मानना था कि पृथ्वी का स्वरूप चपटी गोलाकार तस्तरी के समान है। जो जल पर तैरती रहती है। वे पृथ्वी को ब्रह्माण्ड के मध्य स्थित मानते थे उन्होंने विश्व की उत्पत्ति और नक्षत्रों के सम्बन्ध में एक पुस्तक भी लिखा था और समस्त भूमण्डल को पाँच जलवायु प्रदेशों में विभक्त करने का अग्रणीय कार्य किया था।